वाख (ललद्यद)

पाठ का परिचय

ललद्यद भक्तिकाल की प्रसिद्ध कश्मीरी कवयित्री हैं। उन्होंने कश्मीरी में ही काव्य-रचना की। उनकी मुक्तक रचनाओं को वाख कहा जाता है। भक्तिकाल की व्यापक जन-चेतना और उसके अखिल भारतीय स्वरूप का परिचय कराने के लिए ललद्यद के चार वाखों का हिंदी-अनुवाद पाठ के रूप में प्रस्तुत है। इनमें प्रथम वाख में ईश्वर-प्राप्ति के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों की व्यर्थता, द्वितीय में बाह्याडंबरों को त्यागकर समभावी होने की महत्ता, तृतीय में आत्मालोचन की अभिव्यक्ति के द्वारा सद्कर्मों की महत्ता और चतुर्थ वाख में भेदभाव का विरोध करके ईश्वर की सर्वव्यापकता का भावपूर्ण चित्रण किया गया है।

कविताओं का भावार्थ

वाख

1. **रस्सी कच्चे………………की चाह है घेरे।।**

   भावार्थ—कवयित्री ललद्यद कहती हैं कि जीवनयापन के जितने भी साधन हैं, वे कच्चे धागे की रस्सी के समान अत्यंत कमज़ोर और क्षणभंगुर हैं। इन्हीं के सहारे मैं अपनी जीवनरूपी भक्ति-नौका को खेकर भवसागर के पार जाना चाहती हूँ। पता नहीं, मेरी यह नौका भवसागर के पार जा भी पाएगी अथवा नहीं। मैं तो अब भगवान भरोसे हूँ, न जाने कब मेरे देव मेरी पुकार सुनेंगे और मुझे इस संसार-सागर से पार ले जाएँगे।

   ललद्यद आगे कहती हैं कि मेरा यह जीवन मिट्टी के कच्चे सकोरे के समान है, जिस पर समयरूपी जल की बूँदें निरंतर गिर रही हैं और उसे गलाकर क्षीण कर रही हैं। अर्थात् यह शरीर समयरूपी जल के प्रभाव से क्षीण (बूढ़ा) होता हुआ मृत्यु की ओर अग्रसर है। मेरे प्रभु-मिलन के सारे प्रयास व्यर्थ प्रतीत हो रहे हैं। मेरा ह्रदय रह-रहकर तड़प उठता है। मेरी व्याकुलता बढ़ती जा रही है कि मैं कब प्रभु से मिलूँगी। अब मैं अपने घर अर्थात् परमधाम (परमात्मा के निवास-स्थान) को जाना चाहती हूँ।

2. **खा-खाकर………………बंद द्वार की।**

   भावार्थ—कवयित्री कहती है– हे मनुष्य! तू सांसारिक भोगों में स्वयं को भुला मत। भोगों से कुछ प्राप्त नहीं होगा और न ही भोग के ठीक विपरीत त्याग और तपस्या का जीवन बिताने से तुझे कुछ प्राप्त होगा। हाँ, त्याग-तपस्या का जीवन जीने से एक बात अवश्य होगी कि इससे मन में अहंकार उत्पन्न हो जाएगा। यदि तुझे अपने

जीवन का उद्धार करना है तो तू भोग और त्याग के बीच का मध्यम-मार्ग अपना ले। इंद्रियों पर उचित संयम रखना ही मध्यम-मार्ग है। इसके द्वारा तू सुख-दुःख और भोग-त्याग के बीच समान भाव से रहना सीख। इसी सम मनोदशा से तुझे प्रभु-प्राप्ति के बंद द्वार खोलने में सहायता मिलेगी और प्रभु से तेरा मिलन होगा।

3. आई सीधी राह.......................क्या उतराई?

भावार्थ—कवयित्री कहती है—मैं आई तो थी सीधी राह से, परंतु चल पड़ी उल्टी राह पर अर्थात् जब मेरा जन्म हुआ था तो मैं सभी प्रकार के छल-छद्म से दूर थी, मेरा मन अत्यंत स्वच्छ था। अब जब मेरे जाने का समय हो गया है तो विभिन्न प्रकार के पापों और छल-छद्म से मेरा मन मलिन हो गया है। इस प्रकार मैं वापसी के लिए टेढ़े मार्ग को अपना रही हूँ। आशय यही है कि मैंने अपने जीवन में छल-छद्म करके पापों का अर्जन ही किया है, सद्कर्म एक भी नहीं किया, जबकि मुझे इसके विपरीत मार्ग अपनाना चाहिए था अर्थात् मुझे सद्कर्मों से पुण्यार्जन करना था, छल-छद्म से एक भी पाप नहीं करना था। कवयित्री परमात्मा की प्राप्ति के पथ पर ठीक ही चल पड़ी थी, परंतु उसने सहज मार्ग न पकड़कर हठयोग का मार्ग पकड़ लिया। वह जीवनभर सुषुम्ना नाड़ी को साधने का प्रयास करती रही, कुंडलिनी जागरण की कोशिश करती रही। इसी कोशिश में सारा जीवन बीत गया अर्थात् हठयोग-साधना के द्वारा सुषुम्ना नाड़ी को साधने के क्रिया-व्यापार से उसे कुछ भी तो प्राप्त नहीं हुआ है।

इस प्रकार जब मैं जीवन और मृत्यु के दोराहे पर खड़ी अपने जीवन का लेखा-जोखा देखती हूँ तो मुझे पता चलता है कि मेरे पाप-पुण्य की ज़ेब (गठरी) तो बिलकुल खाली है, उसमें पुण्य अथवा सद्कर्मरूपी एक भी कौड़ी नहीं है। वह तो परमात्मा को जवाब देने योग्य भी नहीं रह गई। अब यदि माझीरूपी परमेश्वर मुझ पर दया करके भवसागर से पार उतार भी दे तो उतराई के नाम पर देने के लिए मेरे पास कुछ भी तो नहीं है। ऐसी हालत में माझी (परमेश्वर) से वह क्या आशा करे कि वह उसे पार ले जाएगा? (शायद नहीं)।

4. थल-थल में बसता.......................साहिब से पहचान।।

भावार्थ—कवयित्री कहती है—परमात्मा सर्वशक्तिमान् है। वह कल्याणकारी और सर्वव्यापी है। इसलिए चाहे कोई हिंदू हो या मुसलमान, उसे अपनाने में किसी को भी भेदभाव नहीं करना चाहिए। कवयित्री ज्ञानी मनुष्यों को संबोधित करती हुई कहती है—हे ज्ञानी! अगर तू सच्चा ज्ञानी है तो पहले स्वयं को जान। अपने आत्मस्वरूप को पहचान। आत्मा से ही परमात्मा को पहचाना जा सकता है।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।
जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।।
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।
जी में उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।।

1. रस्सी कैसी है–
(क) पक्के धागे की (ख) कच्चे धागे की
(ग) रेशम की (घ) जूट की।

2. कवयित्री कच्चे धागे की रस्सी से क्या खींच रही हैं–
(क) गाड़ी (ख) कोल्हू
(ग) नाव (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. 'कच्चे धागे की रस्सी' किसका प्रतीक है–
(क) फूल और पत्तों का
(ख) ईश्वर-प्राप्ति के सांसारिक साधनों का
(ग) सूत से बनी रस्सी का
(घ) रेशम से बनी रस्सी का।

4. कच्चे सकोरे से क्या टपक रहा है–
(क) दूध (ख) शहद
(ग) पानी (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. कवयित्री का कौन-सा प्रयास व्यर्थ हो रहा है–
(क) नाव खींचने का
(ख) भवसागर पार करने का
(ग) सांसारिक साधनों द्वारा ईश्वर-प्राप्ति का
(घ) कच्चे सकोरे में पानी भरने का।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (ग)।

(2) खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।
सम खा तभी होगा समभावी,
खुलेगी साँकल बंद द्वार की।

1. व्यक्ति खा-खाकर कुछ क्यों नहीं पाएगा–
(क) अधिक खाने से व्यक्ति आलसी हो जाता है
(ख) अधिक खाने से बीमार हो जाता है
(ग) अधिक भोग से कुछ शाश्वत प्राप्त नहीं होता
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

2. न खाने से क्या होगा–
(क) मनुष्य कमज़ोर हो जाएगा
(ख) मनुष्य मर जाएगा
(ग) मनुष्य स्वस्थ हो जाएगा
(घ) मनुष्य अंहकारी हो जाएगा।

3. कवयित्री कितना खाने के लिए कहती है–
(क) अधिक (ख) कम
(ग) सम (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. 'खाना' यहाँ किसका प्रतीक है–
(क) योग का (ख) भोग का
(ग) जप का (घ) तप का।

5. बंद द्वार की साँकल खुलने का तात्पर्य है–
(क) दरवाज़ा खुलना (ख) रास्ता मिलना
(ग) प्रभु-मिलन की बाधा दूर होना (घ) आज़ाद हो जाना।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(3) थल-थल में बसता है शिव ही,
भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमां।
ज्ञानी है तो स्वयं को जान,
वही है साहिब से पहचान।।

1. थल-थल में कौन बसता है–
(क) ब्रह्मा (ख) विष्णु
(ग) शिव (घ) गणेश।

2. कवयित्री किसमें भेद न करने के लिए कहती है–
(क) दूध और पानी में (ख) अच्छे और बुरे में
(ग) हिंदू और मुसलमान में (घ) अमीर और गरीब में।

3. कवयित्री की दृष्टि में ज्ञानी कौन है–
(क) जो शास्त्र पढ़ता है (ख) जो तपस्या करता है
(ग) जो सबको जानता है (घ) जो स्वयं को जानता है

4. साहिब से पहचान कैसे होती है–
(क) आत्मज्ञान से (ख) तपस्या से
(ग) यज्ञ-हवन से (घ) योग-वैराग्य से।

5. 'थल-थल' में कौन-सा अलंकार है–
   (क) अनुप्रास (ख) पुनरुक्ति प्रकाश
   (ग) यमक (घ) उत्प्रेक्षा।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ख)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. ललद्यद की काव्य-शैली को कहते हैं–
   (क) पद (ख) दोहा
   (ग) वाख (घ) सवैया।

2. ललद्यद किस भाषा की कवयित्री हैं–
   (क) हिंदी भाषा की (ख) उर्दू भाषा की
   (ग) कश्मीरी भाषा की (घ) मराठी भाषा की।

3. ललद्यद का अन्य नाम है–
   (क) लल्लेश्वरी (ख) ललयोगेश्वरी
   (ग) ललरिफा (घ) ये सभी।

4. ललद्यद का जन्म कब हुआ–
   (क) सन् 1320 में (ख) सन् 1310 में
   (ग) सन् 1420 में (घ) सन् 1520 में।

5. समभावी का क्या अर्थ है–
   (क) ईश्वर के साथ समभाव रखना
   (ख) सभी प्राणियों के साथ समभाव रखना
   (ग) ईश्वर की साधना करना
   (घ) कर्म करते रहना।

6. भवसागर में कौन-सा अलंकार है–
   (क) उपमा (ख) रूपक
   (ग) अनुप्रास (घ) यमक।

7. कच्चे धागे किसका प्रतीक हैं–
   (क) वस्त्र का
   (ख) डोर का
   (ग) कर्मों का
   (घ) कमज़ोर व नाशवान सहारे का।

8. 'वाख' किसे कहते हैं–
   (क) भक्त को (ख) पक्षी को
   (ग) वाणी को (घ) पूजा को।

9. 'जेब टटोलने' की प्रतीकार्थ है–
   (क) आत्मावलोकन करना (ख) खर्च का हिसाब लगाना
   (ग) माझी को उसका किराया देना (घ) किसी का ऋणी न रहना।

10. कवयित्री को कौन-सी चाह घेरे हुए है–
   (क) सुख पाने की (ख) घर जाने की
   (ग) धनवान बनने की (घ) इनमें से कोई नहीं।

11. बंद द्वार की साँकल कैसे खुलेगी–
   (क) ज़ोर लगाने से (ख) तोड़ देने से
   (ग) समभावी बनने से (घ) मंत्रों से।

12. घर जाने की चाह से अभिप्राय है–
   (क) घर जाने की इच्छा (ख) परिवार से मिलन
   (ग) परमात्मा से मिलन (घ) आराम करने की इच्छा।

13. 'जी में हूक उठना' का अर्थ है–
   (क) मन प्रसन्न होना (ख) मन में उत्साह होना
   (ग) मन में तड़प होना (घ) मन निराश होना।

14. कवयित्री को जेब टटोलने पर क्या नहीं मिला–
   (क) कौड़ी नहीं मिली
   (ख) खाने का सामान नहीं मिला
   (ग) रुपया नहीं मिला
   (घ) रुमाल नहीं मिला।

15. कवयित्री किसे अपनी पुकार सुनाना चाहती है–
   (क) माझी को (ख) ईश्वर को
   (ग) अपनी माता को (घ) अपने पिता को।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (ख) **7.** (घ) **8.** (ग) **9.** (क) **10.** (ख) **11.** (ग) **12.** (ग) **13.** (ग) **14.** (क) **15.** (ख)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : कवयित्री ललद्यद के जी में कौन-सी हूक उठती है?

उत्तर : कवयित्री ललद्यद के जी में घर जाने की हूक उठती है। उसका घर परमात्मा का धाम है अर्थात् वह परमात्मा से मिलन चाहती है।

प्रश्न 2 : बंद द्वार की साँकल कैसे खुलेगी?

उत्तर : बंद द्वार की साँकल समभावी बनने से खुलेगी। जब व्यक्ति का सुख-दुःख, मान-अपमान, भोग-त्याग में समान भाव हो जाएगा तो उसके लिए ईश्वर-मिलन का बंद द्वार खुल जाएगा अर्थात् उसे ईश्वर-प्राप्ति हो जाएगी।

प्रश्न 3 : 'रस्सी' कविता में किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उत्तर : 'रस्सी' भक्ति में प्रयोग किए जाने वाले बाह्य आडंबरों (सांसारिक साधनों) के लिए प्रयोग किया गया है। वह बहुत कच्ची है। जिस प्रकार कच्चे धागे की रस्सी से नाव खींचकर सागर से पार नहीं उतरा जा सकता, उसी प्रकार भक्ति में किए जाने वाले आडंबरों से मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 4 : कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर : कवयित्री का जीवन बीता जा रहा है। उसकी उम्र बढ़ती जा रही है और मृत्यु के क्षण निकट आते जा रहे हैं; किंतु प्रभु से मिलने का कोई संयोग नहीं बन पा रहा है। इसीलिए उसे लगता है कि उसकी सारी साधना व्यर्थ हुई जा रही है अर्थात् साधना असफल हो रही है।

प्रश्न 5 : कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : 'घर जाने की चाह' से अभिप्राय है–'परमात्मा से मिलन' आत्मा, परमात्मा का अंश है। वही उसका अंतिम धाम है। मुक्ति के पश्चात् आत्मा परमात्मा में ही विलीन हो जाता है।

प्रश्न 6 : 'ज़ेब टटोली कौड़ी न पाई'–का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव-स्पष्टीकरण**–कवयित्री को अनुभव होता है कि वह पहले तो छल-छद्म के मार्ग पर चलती रही और फिर जीवनभर हठयोग-साधना करती रही, परंतु उसे ईश्वर-प्राप्ति में कोई सफलता नहीं मिल सकी और न ही कोई पुण्यार्जन कर सकी। उसने जब अपनी ज़ेब टटोली अर्थात् उपलब्धियों पर गौर किया तो कौड़ी भी न मिली अर्थात् उसे कुछ भी उपलब्धि दिखाई न दी।

प्रश्न 7 : 'खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी।'–पंक्ति का भाव स्पष्टीकरण कीजिए।

उत्तर : **भाव-स्पष्टीकरण**–मनुष्य भोग कर-करके अपना जीवन नष्ट कर डालता है, किंतु उसे कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं हो पाती है। परमात्मा से वह दिन-पर-दिन दूर होता जाता है। भोग करना एक प्रकार से प्रभु के मार्ग से भटकना है।

भोगों का तिरस्कार करने वाला अर्थात् त्यागी-तपस्वी: व्रती एवं महात्मा कहलाता अवश्य है, परंतु इसीलिए वह अहंकारी भी हो जाता है। वह स्वयं को सबसे ऊँचा मानने लगता है, इसी कारण वह परमात्मा को प्राप्त करने के महान उद्देश्य से भटक जाता है।

प्रश्न 8 : बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर : बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने सुझाव दिया है कि भोग और त्याग के बीच संतुलन बनाए रखो। न तो भोगों में पूरी तरह स्वयं को लिप्त करो और न ही त्याग, तप, उपवास आदि में शरीर को कष्ट दो। दोनों ही स्थितियों में प्रभु-मिलन के मार्ग से भटकाव संभव है; अतः तुम मध्यम-मार्ग अपनाओ। प्रभु-मिलन का द्वार तभी खुलेगा।

प्रश्न 9 : कवयित्री के जी में हूक क्यों उठ रही है?

उत्तर : कवयित्री के हृदय में ईश्वर से मिलने की तड़प है। वह बार-बार चाहकर भी उसका सान्निध्य नहीं प्राप्त कर पा रही है। उसकी प्रभु से मिलने की तड़प, व्याकुलता और वेदना शांत नहीं हो पा रही है, इसलिए उसके जी में उस देव से मिलने की हूक बार-बार उठती है।

प्रश्न 10 : खा-खाकर कुछ प्राप्त क्यों नहीं होता और न खाने से मनुष्य अहंकारी क्यों बनता है?

उत्तर : खाने का अर्थ यहाँ उपभोग से है। भोगों का जितना अधिक उपभोग किया जाता है, मन उतना ही प्रभु से दूर हटता जाता है और ईश्वर की साधना में मन नहीं रमता। इसलिए अधिक भोग से व्यक्ति को कुछ शाश्वत प्राप्त नहीं होता।

न खाने से अर्थात् इंद्रियों पर संयम रखने से और त्याग-तपस्या का जीवन जीने से मनुष्य स्वयं को बड़ा भारी त्यागी, महात्मा और संत मानने लगता है। इस प्रकार मनुष्य न खाने से अहंकारी बन जाता है।

प्रश्न 11 : 'गई न सीधी राह' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : 'गई न सीधी राह' से आशय है–कवयित्री सत्य, सद्कर्म और भक्ति के मार्ग को छोड़कर छल-छद्मपूर्ण जीवन-मार्ग पर चलती रही, वह भक्ति के सरल मार्ग पर न चलकर हठयोग के कठिन मार्ग पर चल पड़ी।

प्रश्न 12 : माझी कौन है? कवयित्री उसके सामने क्यों परेशान है?

उत्तर : 'माझी' ईश्वर है। वही इस भवसागर को पार कराने की शक्ति रखता है। वही जीवनरूपी नाव का नाविक है। कवयित्री उसके सामने इसलिए परेशान है; क्योंकि उसके पास उसे उतराई के रूप में देने को कुछ भी नहीं है। कवयित्री ने हठयोग-साधना में रत होकर कुछ भी प्राप्त नहीं किया।

प्रश्न 13 : सुषुम-सेतु किसे कहा गया है?

उत्तर : 'सुषुम-सेतु' सुषुम्ना नाड़ी की साधना को कहा गया है। हठयोगी सुषुम्ना नाड़ी के माध्यम से कुंडलिनी जाग्रत करने के लिए विभिन्न प्रकार की योग-साधना करते हैं। सुषुम्ना के इसी माध्यम को सुषुम-सेतु कहा गया है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर-विकल्प चुनकर लिखिए–*

थल-थल में बसता है शिव ही,
भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमां।
ज्ञानी है तो स्वयं को जान,
वही है साहिब से पहचान।।

1. थल-थल में कौन बसता है–

(क) ब्रह्मा (ख) विष्णु
(ग) शिव (घ) गणेश।

2. कवयित्री किसमें भेद न करने के लिए कहती है–

(क) दूध और पानी में
(ख) अच्छे और बुरे में
(ग) हिंदू और मुसलमान में
(घ) अमीर और गरीब में।

3. कवयित्री की दृष्टि में ज्ञानी कौन है–

(क) जो शास्त्र पढ़ता है (ख) जो तपस्या करता है
(ग) जो सबको जानता है (घ) जो स्वयं को जानता है

4. साहिब से पहचान कैसे होती है–

(क) आत्मज्ञान से (ख) तपस्या से
(ग) यज्ञ-हवन से (घ) योग-वैराग्य से।

5. 'थल-थल' में कौन-सा अलंकार है–

(क) अनुप्रास
(ख) पुनरुक्ति प्रकाश
(ग) यमक
(घ) उत्प्रेक्षा।

निर्देश–*दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. ललद्यद का जन्म कब हुआ–

(क) सन् 1320 में (ख) सन् 1310 में
(ग) सन् 1420 में (घ) सन् 1520 में।

7. कच्चे धागे किसका प्रतीक हैं–

(क) वस्त्र का
(ख) डोर का
(ग) कर्मों का
(घ) कमज़ोर व नाशवान सहारे का।

8. बंद द्वार की साँकल कैसे खुलेगी–

(क) ज़ोर लगाने से (ख) तोड़ देने से
(ग) समभावी बनने से (घ) मंत्रों से।

निर्देश–*दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. 'रस्सी' कविता में किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

10. कवयित्री के जी में हूक क्यों उठ रही है?

11. माझी कौन है? कवयित्री उसके सामने क्यों परेशान है?